Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 03, Issue 9, pp 95-105, September, 2026

वैदिक ज्ञान परंपरा और समग्र मानव विकास: भारतीय शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. ममता जोशी

(प्रधानाचार्या)
बी.एस.एम. वूमैन बी.एड. कॉलेज, रुड़की

सारांश :

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को केवल सूचना, व्यावसायिक योग्यता अथवा बौद्धिक दक्षता अर्जित करने का साधन नहीं माना गया, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक विकास की समन्वित प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया गया है। वैदिक एवं उपनिषदिक चिंतन में ज्ञान का उद्देश्य मनुष्य को आत्मबोध, विवेक, अनुशासन, उत्तरदायित्व, सह-अस्तित्व और लोककल्याण की दिशा में उन्मुख करना है। वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में बढ़ती परीक्षा-केंद्रितता, मूल्य-संकट, मानसिक तनाव, सामाजिक प्रतिस्पर्धा तथा जीवन-कौशल से संबंधित चुनौतियों के संदर्भ में वैदिक ज्ञान परंपरा की समग्र दृष्टि विशेष रूप से प्रासंगिक प्रतीत होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा को समग्र, बहुविषयक, मूल्यपरक, अनुभवात्मक तथा भारतीय ज्ञान-परंपरा से संबद्ध बनाने पर बल देती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य वैदिक ज्ञान परंपरा में निहित शिक्षा संबंधी प्रमुख सिद्धांतों का विश्लेषण करना तथा शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मानव विकास में उनकी संभावित भूमिका का परीक्षण करना है। अध्ययन गुणात्मक एवं समीक्षात्मक प्रकृति का है तथा इसके लिए वेदों, उपनिषदों, भारतीय शिक्षा-दर्शन से संबंधित प्रामाणिक ग्रंथों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के भारतीय ज्ञान प्रणाली संबंधी दिशानिर्देशों एवं संबंधित समकालीन शोध साहित्य का अध्ययन किया गया है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि वैदिक ज्ञान परंपरा में ज्ञान, चरित्र, आत्म-अनुशासन, गुरु-शिष्य संवाद, अनुभव, चिंतन, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार किया गया है। निष्कर्षतः आधुनिक शिक्षा में वैदिक ज्ञान के प्रासंगिक एवं सार्वभौमिक पक्षों का वैज्ञानिक, आलोचनात्मक, समावेशी तथा संदर्भानुकूल समावेश विद्यार्थियों के समग्र विकास में उपयोगी हो सकता है।

मुख्य शब्द: वैदिक ज्ञान परंपरा, भारतीय ज्ञान प्रणाली, समग्र मानव विकास, भारतीय शिक्षा व्यवस्था, मूल्य शिक्षा, गुरु-शिष्य परंपरा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पंचकोश।

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक एवं बौद्धिक संरचना के निर्माण का प्रमुख आधार होती है। शिक्षा के माध्यम से केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं होता, बल्कि व्यक्ति के विचार, व्यवहार, मूल्य, जीवन-दृष्टि तथा समाज के प्रति उत्तरदायित्व का भी विकास होता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को जीवन से पृथक प्रक्रिया के रूप में नहीं देखा गया। ज्ञान, आचरण, आत्मानुशासन, सामाजिक दायित्व और आत्मविकास को परस्पर संबद्ध माना गया।

वैदिक साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा के प्राचीनतम उपलब्ध स्रोतों में सम्मिलित है। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद के अतिरिक्त ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद वैदिक विचारधारा के व्यापक बौद्धिक विकास का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन ग्रंथों में जीवन, प्रकृति, ज्ञान, सत्य, कर्तव्य, समाज, मनुष्य तथा ब्रह्मांड से संबंधित विविध प्रश्नों पर चिंतन मिलता है। वैदिक-उपनिषदिक परंपरा ने बाद के भारतीय दर्शन, शिक्षा, योग, नैतिक चिंतन तथा सामाजिक जीवन को भी गहराई से प्रभावित किया।

ऋग्वेद का विचार **"आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः"** अर्थात् हमारे पास सभी दिशाओं से कल्याणकारी विचार आएँ, ज्ञान के प्रति खुलेपन की भावना को अभिव्यक्त करता है। इसी प्रकार **"संगच्छध्वं संवदध्वं"** सामूहिकता, संवाद और सामाजिक सहयोग का संदेश देता है। तैत्तिरीय उपनिषद में शिक्षा पूर्ण होने पर विद्यार्थी को दिए जाने वाले उपदेश—**"सत्यं वद, धर्मं चर"**—ज्ञान के साथ नैतिक आचरण के महत्व को स्पष्ट करते हैं। इस प्रकार भारतीय शिक्षा-दृष्टि में ज्ञान का उद्देश्य केवल स्मरण अथवा सूचना-संग्रह नहीं, बल्कि ज्ञान को जीवन और आचरण में रूपांतरित करना रहा है।

आधुनिक समय में शिक्षा अत्यधिक तकनीकी, प्रतिस्पर्धात्मक एवं रोजगार-केंद्रित हो रही है। विज्ञान और तकनीक ने मानव जीवन में अभूतपूर्व प्रगति की है, परन्तु शिक्षा के समक्ष मानसिक तनाव, सामाजिक अलगाव, नैतिक द्वंद्व, पर्यावरणीय संकट तथा मूल्यों के क्षरण जैसी समस्याएँ भी उपस्थित हैं। ऐसी परिस्थितियों में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या भारतीय ज्ञान परंपरा में उपलब्ध समग्र शिक्षा-दृष्टि आधुनिक शिक्षा की कुछ चुनौतियों को समझने और संबोधित करने में सहायक हो सकती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में महत्वपूर्ण परिवर्तन का संकेत देती है। नीति शिक्षा के माध्यम से संज्ञानात्मक क्षमताओं के साथ-साथ सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक क्षमताओं के विकास को आवश्यक मानती है तथा भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृति, भाषा, योग और स्थानीय ज्ञान के अध्ययन को प्रोत्साहित करती है (भारत सरकार, 2020)।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य

1. वैदिक-उपनिषदिक शिक्षा में व्यक्ति के बहुआयामी विकास पर बल मिलता है।
2. ज्ञान के साथ आचरण और मूल्यों को जोड़ा गया है।
3. गुरु और विद्यार्थी के बीच जीवंत संवाद को महत्त्व दिया गया।
4. आत्मचिंतन और स्व-अनुशासन शिक्षा का महत्वपूर्ण पक्ष रहे।
5. मनुष्य और प्रकृति के परस्पर संबंध को महत्त्व दिया गया।
6. शिक्षा को सामाजिक उत्तरदायित्व और लोककल्याण से जोड़ा गया।
7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान प्रणाली के अध्ययन और समावेश पर विशेष बल देती है।
8. वर्तमान शिक्षा में समग्र विकास की अवधारणा निरंतर महत्वपूर्ण हो रही है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. वैदिक ज्ञान परंपरा की शिक्षा संबंधी मूल अवधारणाओं का अध्ययन करना।
2. वैदिक शिक्षा-दर्शन में निहित समग्र मानव विकास की अवधारणा का विश्लेषण करना।
3. वैदिक ज्ञान परंपरा में शारीरिक विकास के महत्व का अध्ययन करना।
4. मानसिक एवं भावनात्मक विकास में वैदिक-उपनिषदिक विचारों की भूमिका का विश्लेषण करना।
5. बौद्धिक एवं विवेकपूर्ण चिंतन के विकास से संबंधित वैदिक शिक्षा सिद्धांतों का अध्ययन करना।
6. नैतिक एवं चारित्रिक विकास में वैदिक ज्ञान की भूमिका का परीक्षण करना।
7. सामाजिक विकास, सहयोग एवं उत्तरदायित्व से संबंधित वैदिक दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
8. आध्यात्मिक एवं आत्मिक विकास की शिक्षा संबंधी अवधारणा का विश्लेषण करना।
9. वैदिक ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के समग्र शिक्षा संबंधी उद्देश्यों के बीच संबंधों का अध्ययन करना।
10. वर्तमान भारतीय शिक्षा में वैदिक ज्ञान के उपयोग की संभावनाओं एवं चुनौतियों का विश्लेषण करना।

4. शोध प्रश्न

1. वैदिक ज्ञान परंपरा में शिक्षा का मूल उद्देश्य क्या था?
2. वैदिक-उपनिषदिक चिंतन समग्र मानव विकास की अवधारणा को किस प्रकार प्रस्तुत करता है?
3. वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में वैदिक ज्ञान के कौन से पक्ष उपयोगी हो सकते हैं?
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की क्या भूमिका हो सकती है?
5. वैदिक ज्ञान के आधुनिक शिक्षा में समावेश से संबंधित प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं?

5. अध्ययन की शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक, वर्णनात्मक एवं समीक्षात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इसमें किसी प्रकार का प्राथमिक सर्वेक्षण, प्रयोग अथवा सांख्यिकीय परीक्षण नहीं किया गया है।

5.1 अध्ययन के स्रोत

अध्ययन के लिए मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है—

- वेदों के चयनित शैक्षिक एवं दार्शनिक संदर्भ
- चयनित उपनिषद
- भारतीय शिक्षा एवं दर्शन से संबंधित मानक ग्रंथ
- प्राचीन भारतीय शिक्षा पर उपलब्ध विद्वत साहित्य
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
- यूजीसी के भारतीय ज्ञान प्रणाली संबंधी दिशानिर्देश
- भारतीय ज्ञान प्रणाली और समग्र शिक्षा पर प्रकाशित शोध-पत्र
- संबंधित पुस्तकों एवं शोध आलेखों का अध्ययन।

5.2 विश्लेषण की विधि

संकलित साहित्य का विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis) तथा विषयगत विश्लेषण (Thematic Analysis) किया गया। प्रमुख विषयों को शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास की श्रेणियों में व्यवस्थित किया गया।

6. **वैदिक ज्ञान परंपरा की अवधारणा**

वैदिक ज्ञान परंपरा को केवल चार वेदों के मंत्रों तक सीमित करके देखना इसकी व्यापकता को कम कर देता है। वैदिक साहित्य में संहिताओं से लेकर ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषदों तक विचार का क्रमिक विकास दिखाई देता है। इसमें प्रकृति, मनुष्य, समाज, ज्ञान, सत्य, कर्तव्य और जीवन के उद्देश्य पर विविध दृष्टियाँ विकसित हुईं। भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान का आधार केवल बाह्य संसार का अध्ययन नहीं बल्कि स्वयं को समझना भी था। प्रश्न करना, संवाद करना, गुरु से ज्ञान ग्रहण करना, उस पर चिंतन करना तथा जीवन में उसका प्रयोग करना ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया का हिस्सा माना गया। वर्तमान भारतीय ज्ञान प्रणाली की अवधारणा भी केवल दर्शन तक सीमित नहीं है। इसमें भाषा, साहित्य, गणित, खगोल, स्वास्थ्य, कला, वास्तु, कृषि, शासन, पर्यावरण, योग और विभिन्न व्यावहारिक ज्ञान परंपराओं को सम्मिलित किया जाता है। यूजीसी के भारतीय ज्ञान प्रणाली संबंधी दिशानिर्देश उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों तथा उनके समकालीन ज्ञान से संबंध को समझने पर जोर देते हैं (UGC, 2023)।

7. **वैदिक शिक्षा का उद्देश्य**

वैदिक शिक्षा के उद्देश्यों को आधुनिक अर्थों में एक समान या केंद्रीकृत पाठ्यक्रम के रूप में प्रस्तुत करना ऐतिहासिक रूप से उचित नहीं होगा। फिर भी वैदिक एवं उत्तरवैदिक साहित्य के अध्ययन से कुछ व्यापक शैक्षिक आदर्श सामने आते हैं।

7.1 ज्ञान एवं विवेक का विकास: विद्यार्थी के भीतर सत्य की खोज, प्रश्न करने, सुनने, चिंतन करने तथा निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना महत्वपूर्ण था।

7.2 चरित्र निर्माण: ज्ञान और चरित्र को अलग नहीं माना गया। सत्य, संयम, कर्तव्य, अनुशासन और उत्तरदायित्व को शिक्षित व्यक्ति के महत्वपूर्ण गुण माना गया।

7.3 आत्मानुशासन: ब्रह्मचर्य की व्यापक शैक्षिक व्याख्या आत्मनियंत्रण, नियमित जीवन, अध्ययन के प्रति समर्पण तथा इन्द्रिय-संयम से की जा सकती है।

7.4 सामाजिक उत्तरदायित्व: शिक्षा के बाद विद्यार्थी केवल अपने लिए नहीं बल्कि परिवार और समाज के प्रति जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में जीवन व्यतीत करे, यह शिक्षा का महत्वपूर्ण सामाजिक आयाम था।

7.5 आत्मबोध: उपनिषदों में ज्ञान का उच्चतर उद्देश्य अपने वास्तविक स्वरूप तथा जीवन के गहरे प्रश्नों की खोज से संबंधित है।

इस प्रकार प्राचीन भारतीय शिक्षा में **Knowing, Doing, Being और Living Together** जैसी आधुनिक holistic education की अवधारणाओं के समान कई तत्व दिखाई देते हैं।

8. **समग्र मानव विकास की अवधारणा**

समग्र मानव विकास का आशय व्यक्ति के किसी एक पक्ष के बजाय उसके संपूर्ण व्यक्तित्व के संतुलित विकास से है। इसे निम्न रूप में देखा जा सकता है—

समग्र मानव विकास =

शारीरिक विकास + मानसिक विकास + भावनात्मक विकास + बौद्धिक विकास + नैतिक विकास + सामाजिक विकास + आध्यात्मिक विकास

भारतीय ज्ञान परंपरा में इन आयामों को पूर्णतः अलग-अलग नहीं माना गया बल्कि एक-दूसरे से संबंधित समझा गया।

9. **पंचकोश अवधारणा और मानव विकास**

तैत्तिरीय उपनिषद में मानव अस्तित्व की व्याख्या पाँच कोशों के माध्यम से की गई है—

1. **अन्नमय कोश** – शारीरिक आयाम
2. **प्राणमय कोश** – जीवन ऊर्जा से संबंधित आयाम
3. **मनोमय कोश** – मानसिक एवं भावात्मक आयाम
4. **विज्ञानमय कोश** – विवेक एवं ज्ञान का आयाम
5. **आनन्दमय कोश** – आंतरिक संतुलन एवं आध्यात्मिक आयाम

मूल उपनिषदिक संदर्भ एक दार्शनिक-आध्यात्मिक विश्लेषण है; इसे सीधे आधुनिक मनोवैज्ञानिक मॉडल मानना उचित नहीं होगा। फिर भी समकालीन शिक्षा में पंचकोश को समग्र विकास समझने के लिए एक भारतीय वैचारिक ढाँचे के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

9.1 समकालीन शैक्षिक व्याख्या

पंचकोश	संभावित शैक्षिक आयाम
अन्नमय	शारीरिक स्वास्थ्य, पोषण, व्यायाम
प्राणमय	जीवन ऊर्जा, श्वास-जागरूकता, सक्रियता
मनोमय	भावनाएँ, मानसिक संतुलन, संवेदनशीलता
विज्ञानमय	ज्ञान, विवेक, आलोचनात्मक चिंतन
आनन्दमय	आत्मबोध, आंतरिक संतोष, जीवन का अर्थ

यह दृष्टिकोण शिक्षा को केवल marks और degree तक सीमित रखने के बजाय learner development के व्यापक आयामों की ओर ले जाता है।

10. **शारीरिक विकास में वैदिक ज्ञान की भूमिका**

प्राचीन भारतीय शिक्षा में शरीर और मन के विकास को विरोधी नहीं माना गया। स्वस्थ जीवन, संयमित आहार, दिनचर्या, श्रम और अनुशासन जीवन-व्यवस्था के महत्वपूर्ण पक्ष रहे। आधुनिक शिक्षा में इसका उपयोग—नियमित शारीरिक गतिविधि, योग, स्वस्थ जीवनशैली, उचित आहार संबंधी जागरूकता, नींद एवं दिनचर्या, खेल, प्रकृति-आधारित गतिविधियों के माध्यम से किया जा सकता है। यह आवश्यक है कि इन अभ्यासों को समकालीन स्वास्थ्य विज्ञान और प्रमाण-आधारित दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया जाए।

11. **मानसिक एवं भावनात्मक विकास**

वर्तमान शिक्षा में मानसिक स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय बन गया है। विद्यार्थियों में शैक्षणिक दबाव, प्रतियोगिता, भविष्य की चिंता और डिजिटल जीवनशैली से संबंधित तनाव बढ़ रहे हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा में मन के नियमन, आत्मनिरीक्षण, संयम तथा ध्यान पर विशेष बल मिलता है।

11.1 आधुनिक शिक्षा में संभावित प्रयोग

- ध्यान एवं सचेतनता आधारित गतिविधियाँ
- श्वसन-जागरूकता
- आत्मचिंतन
- चिंतनशील डायरी
- भावनात्मक जागरूकता
- तनाव प्रबंधन
- शांत एवं संवादात्मक कक्षा का वातावरण

इनका उद्देश्य धार्मिक अनुष्ठान थोपना नहीं बल्कि विद्यार्थियों में आत्मनियमन, ध्यान, भावनात्मक संतुलन और स्वयं के प्रति जागरूकता विकसित करना होना चाहिए।

12. **बौद्धिक विकास और वैदिक ज्ञान**

यह धारणा उचित नहीं है कि प्राचीन भारतीय शिक्षा केवल स्मरण पर आधारित थी। मौखिक परंपरा में स्मृति का महत्त्व अवश्य था, किंतु उपनिषदों और भारतीय दार्शनिक परंपराओं में प्रश्न, संवाद, तर्क और चिंतन की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। उपनिषदों में गुरु और शिष्य के बीच अनेक संवाद ज्ञान निर्माण की प्रश्नोन्मुख परंपरा को दर्शाते हैं।

12.1 श्रवण–मनन–निदिध्यासन: ज्ञान की प्रक्रिया को सामान्यतः तीन चरणों से समझाया जाता है—

श्रवण → मनन → निदिध्यासन

- **श्रवण** – ज्ञान को ध्यानपूर्वक ग्रहण करना।
- **मनन** – प्राप्त ज्ञान पर विचार एवं परीक्षण करना।

- **निदिध्यासन** – ज्ञान का गहन आत्मसात एवं जीवन में प्रयोग।

आधुनिक शिक्षा में इसे इस प्रकार समझा जा सकता है—

Learning → Critical Reflection → Application/Internalisation

यह पद्धति rote learning की तुलना में reflective learning और deep learning के अधिक निकट दिखाई देती है।

13. नैतिक एवं चारित्रिक विकास

वैदिक-उपनिषदिक शिक्षा में ज्ञान और नैतिकता का निकट संबंध था। तैत्तिरीय उपनिषद का प्रसिद्ध उपदेश— **"सत्यं वद। धर्मं चर।"**

सत्यनिष्ठा और कर्तव्यपरायणता के महत्व को दर्शाता है।

वर्तमान शिक्षा में विद्यार्थियों को केवल नैतिक नियम याद करवाना पर्याप्त नहीं है। नैतिक शिक्षा को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जोड़ना आवश्यक है। इसके लिए— Ethical dilemmas, Case studies, सामुदायिक सेवा, Academic honesty, सामाजिक उत्तरदायित्व, पर्यावरणीय नैतिकता, सहानुभूति, Professional ethics को पाठ्यक्रम और सह-पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जा सकता है। यूजीसी का **Mulya Pravah 2.0** भी उच्च शिक्षा संस्थानों में मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक नैतिकता के संवर्धन पर बल देता है।

14. सामाजिक विकास

ऋग्वेद का प्रसिद्ध विचार—

"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्"

साथ चलने, संवाद करने और सामूहिक समझ की भावना व्यक्त करता है।

शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है जो केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं बल्कि सामूहिक कल्याण को भी महत्त्व दें। इस दृष्टि से वैदिक ज्ञान के सामाजिक तत्व आधुनिक शिक्षा में निम्न प्रकार उपयोगी हो सकते हैं—

- सहयोगात्मक अधिगम
- Team work
- संवाद आधारित शिक्षण
- Community participation
- सेवा अधिगम
- सहिष्णुता
- सामाजिक उत्तरदायित्व
- विविधता के प्रति सम्मान

15. आध्यात्मिक विकास

आध्यात्मिक विकास को किसी विशेष धार्मिक मत के पालन तक सीमित करना उचित नहीं है। शैक्षिक संदर्भ में इसका अर्थ जीवन के उद्देश्य, आत्मबोध, आंतरिक शांति, आत्म-चिंतन, करुणा, जिम्मेदारी और अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों पर संवेदनशीलता विकसित करना हो सकता है। उपनिषदों की प्रश्नपरक परंपरा व्यक्ति को स्वयं और संसार के बारे में गहराई से सोचने के लिए प्रेरित करती है। आधुनिक शिक्षा में आध्यात्मिक विकास का समावेश समावेशी, गैर-सांप्रदायिक तथा आलोचनात्मक दृष्टिकोण से होना चाहिए।

16. गुरु-शिष्य परंपरा का शैक्षिक महत्व

गुरु-शिष्य संबंध भारतीय शिक्षा परंपरा की विशिष्ट विशेषता रहा है। इसका मूल आधार केवल authority नहीं बल्कि निकट शैक्षिक संबंध और व्यक्तिगत मार्गदर्शन था। आधुनिक शिक्षा में इसके उपयोगी पक्षों को परामर्श प्रणाली के रूप में विकसित किया जा सकता है।

आधुनिक रूप

प्राचीन गुरु-शिष्य संबंध → आधुनिक Mentor–Mentee System

शिक्षक—

- केवल content provider न हो,
- विद्यार्थी का mentor बने,

- उसकी शैक्षणिक समस्याएँ समझे,
- प्रतिभा और रुचि पहचानने में सहयोग करे,
- नैतिक एवं व्यक्तिगत विकास में मार्गदर्शन करे।

हालाँकि आधुनिक लोकतांत्रिक शिक्षा में शिक्षक-विद्यार्थी संबंध समान गरिमा, स्वतंत्र विचार और प्रश्न करने के अधिकार पर आधारित होना चाहिए।

17. **प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण**

वैदिक साहित्य में सूर्य, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं प्रकृति के अन्य तत्वों के प्रति सम्मान के अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं। इनका आधुनिक पर्यावरण शिक्षा में अर्थ प्रकृति को केवल उपभोग की वस्तु न मानकर जीवन के आधार के रूप में देखना हो सकता है। आज जलवायु परिवर्तन, पानी की कमी और जैव विविधता का नुकसान जैसी समस्याओं के संदर्भ में यह दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है। शिक्षा में—

- प्रकृति आधारित सीख
- जल संरक्षण,
- वृक्षारोपण,
- सतत जीवन शैली,
- स्थानीय पर्यावरणीय ज्ञान,
- पारिस्थितिक जिम्मेदारी

जैसी गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा सकता है।

18. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति** 2020 **और वैदिक/भारतीय ज्ञान परंपरा**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा के इतिहास में महत्वपूर्ण परिवर्तन प्रस्तुत करती है। नीति स्पष्ट करती है कि शिक्षा केवल संज्ञानात्मक क्षमताओं तक सीमित न होकर विद्यार्थियों के सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक एवं रचनात्मक विकास को भी प्रोत्साहित करे। NEP 2020 में—समग्र विकास, बहु-विषयक शिक्षा, अनुभवात्मक शिक्षा, आलोचनात्मक सोच, भारतीय भाषाएँ, भारतीय संस्कृति, भारतीय ज्ञान प्रणाली, योग, नैतिक शिक्षा, कला एवं खेल, स्थानीय ज्ञान को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। नीति भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक ज्ञान के विकल्प के रूप में प्रस्तुत नहीं करती, बल्कि भारतीय ज्ञान और समकालीन ज्ञान के सार्थक समन्वय की संभावनाएँ खोलती है। यूजीसी ने 2023 में उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान को शामिल करने के लिए दिशानिर्देश जारी कीं और भारतीय ज्ञान प्रणाली को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों से जोड़ने के लिए संस्थागत दिशा प्रदान की।

19. **आधुनिक शिक्षा और वैदिक शिक्षा का तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य**

वैदिक/भारतीय शिक्षा का प्रमुख आदर्श	**आधुनिक शिक्षा में संभावित रूप**
गुरु-शिष्य संवाद	Mentoring
श्रवण	Active Listening
मनन	Critical Reflection
निदिध्यासन	Application/Internalisation
आत्म-अनुशासन	Self-regulated Learning
मूल्य एवं आचरण	Value Education

वैदिक/भारतीय शिक्षा का प्रमुख आदर्श	आधुनिक शिक्षा में संभावित रूप
शारीरिक अनुशासन	Health & Physical Education
आत्मचिंतन	Reflective Practice
सामूहिकता	Collaborative Learning
प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता	Environmental Education
जीवनपरक ज्ञान	Experiential Learning
विविध ज्ञान क्षेत्रों का अध्ययन	Multidisciplinary Education
आत्मबोध	Self-awareness
लोककल्याण	Social Responsibility

20. वैदिक ज्ञान परंपरा और 21वीं सदी के कौशल

वैदिक ज्ञान का आधुनिक उपयोग तभी सार्थक होगा जब उसे समकालीन आवश्यकताओं से जोड़ा जाए।

1. **Critical Thinking:** प्रश्न, संवाद और चिंतन की परंपरा आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित कर सकती है।
2. **Communication:** संवाद परंपरा और वाद-विवाद communication skills से जोड़े जा सकते हैं।
3. **Collaboration:** "संगच्छध्वं संवदध्वं" की भावना collaborative learning से संबंधित की जा सकती है।
4. **Self-management:** आत्म-अनुशासन और संयम self-regulation से संबंधित हैं।
5. **Emotional Intelligence:** आत्मनिरीक्षण एवं मन के नियमन की परंपराएँ emotional awareness के विकास में उपयोगी हो सकती हैं।
6. **Ethical Leadership:** कर्तव्य, सत्य और लोककल्याण का विचार ethical leadership के विकास में सहायक हो सकता है।

इस प्रकार वैदिक ज्ञान को केवल अतीत का अध्ययन बनाकर रखने के बजाय वर्तमान जीवन और भविष्य की क्षमताओं से जोड़ा जा सकता है।

21. साहित्य समीक्षा से उभरते प्रमुख निष्कर्ष

Bhatta (2009) ने प्राचीन भारतीय शिक्षा को mind और body के संतुलित विकास तथा creative, ethical और learning-oriented mind के निर्माण से संबद्ध किया। बाद के अध्ययनों में भी भारतीय शिक्षा परंपरा के holistic और value-based स्वरूप पर बल दिया गया है। Patil और Patil ने पारंपरिक भारतीय शैक्षिक मूल्यों और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बीच संबंध का विश्लेषण करते हुए holistic और Bharat-centric education की दिशा को रेखांकित किया। हाल के अध्ययनों में भारतीय ज्ञान प्रणाली के आधुनिक शिक्षा में समावेश को विद्यार्थियों के intellectual, emotional, ethical और cultural development से जोड़ा गया है। साथ ही scholars ने teacher preparedness, standardized learning resources, epistemological differences और inclusive implementation जैसी चुनौतियों को भी रेखांकित किया है।

अतः उपलब्ध साहित्य का समग्र निष्कर्ष यह नहीं है कि प्राचीन शिक्षा पद्धति को यथावत आधुनिक शिक्षा में पुनर्स्थापित कर दिया जाए। अधिक उचित दृष्टिकोण यह है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के उपयोगी सिद्धांतों को आधुनिक वैज्ञानिक, लोकतांत्रिक और समावेशी शिक्षा के साथ आलोचनात्मक रूप से जोड़ा जाए।

22. वैदिक ज्ञान के समावेश से संभावित लाभ

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में वैदिक ज्ञान परंपरा के प्रासंगिक तत्वों का समावेश निम्न प्रकार लाभदायक हो सकता है—

- विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व का विकास।
- मूल्यपरक एवं नैतिक शिक्षा को मजबूती।
- आत्म-अनुशासन और self-regulation का विकास।
- मानसिक एवं भावनात्मक संतुलन को समर्थन।
- सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक ज्ञान में वृद्धि।
- Critical thinking को प्रोत्साहन।
- Experiential learning को बढ़ावा।
- शिक्षक-विद्यार्थी mentoring संबंधों को मजबूती।
- पर्यावरणीय चेतना का विकास।
- सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना।
- भारतीय भाषाओं एवं मूल ग्रंथों के अध्ययन में रुचि।
- Interdisciplinary learning को प्रोत्साहन।
- शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाने में सहायता।
- आत्म-जागरूकता और जीवन-दृष्टि का विकास।
- Global knowledge और indigenous knowledge के बीच सार्थक संवाद।

23. प्रमुख चुनौतियाँ

वैदिक एवं भारतीय ज्ञान को आधुनिक शिक्षा में सम्मिलित करने में अनेक सावधानियाँ आवश्यक हैं।

23.1 प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी: प्राचीन ग्रंथों की भाषा, ऐतिहासिक संदर्भ और दर्शन समझने वाले प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या सीमित हो सकती है।

23.2 प्रामाणिक स्रोतों की समस्या: सोशल मीडिया अथवा लोकप्रिय साहित्य में अनेक अप्रमाणित दावे "वैदिक विज्ञान" के नाम से प्रस्तुत किए जाते हैं। शिक्षा में केवल प्रामाणिक एवं शोध-समर्थित सामग्री का उपयोग आवश्यक है।

23.3 वैज्ञानिक दृष्टिकोण: ऐतिहासिक एवं दार्शनिक ज्ञान को contemporary scientific claims के समान प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए जब तक पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध न हों।

23.4 धार्मिक और शैक्षिक ज्ञान में अंतर: वैदिक साहित्य का अध्ययन अकादमिक, ऐतिहासिक एवं दार्शनिक दृष्टि से किया जाना चाहिए तथा किसी विशेष आस्था को विद्यार्थियों पर आरोपित नहीं किया जाना चाहिए।

23.5 सामाजिक समावेशन: प्राचीन व्यवस्थाओं को आदर्शीकृत करने के बजाय उनके ऐतिहासिक सामाजिक संदर्भों, सीमाओं और असमानताओं का भी आलोचनात्मक अध्ययन आवश्यक है।

23.6 पाठ्यक्रम में संतुलन: IKS का समावेश आधुनिक विज्ञान, तकनीक एवं वैश्विक ज्ञान की कीमत पर नहीं बल्कि उनके साथ समन्वय में होना चाहिए।

24. शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्न शैक्षिक निहितार्थ सामने आते हैं—

विद्यालय स्तर पर

- मूल्य शिक्षा को व्यवहारिक बनाया जाए।
- योग एवं शारीरिक शिक्षा को नियमित स्थान दिया जाए।
- भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित stories, texts और विचारों को आयु-अनुकूल रूप में शामिल किया जाए।
- प्रकृति आधारित शिक्षण गतिविधियाँ कराई जाएँ।
- ध्यान और self-reflection की सरल गतिविधियाँ अपनाई जाएँ।

उच्च शिक्षा में

- IKS आधारित elective courses विकसित किए जाएँ।
- विभिन्न विषयों में भारतीय योगदान का प्रमाण-आधारित अध्ययन कराया जाए।

- संस्कृत एवं भारतीय भाषाओं के स्रोतों की interdisciplinary study को बढ़ावा दिया जाए।
- IKS और आधुनिक विज्ञान के बीच comparative research को प्रोत्साहित किया जाए।

शिक्षक शिक्षा में

- शिक्षकों को IKS के ऐतिहासिक एवं दार्शनिक आधार का प्रशिक्षण दिया जाए।
- आलोचनात्मक एवं evidence-based teaching विकसित की जाए।
- Mentor–mentee प्रणाली को मजबूत बनाया जाए।

25. सुझाव

- भारतीय ज्ञान प्रणाली को चरणबद्ध रूप से पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए।
- सामग्री का विकास विषय विशेषज्ञों, संस्कृत विद्वानों, इतिहासकारों एवं आधुनिक वैज्ञानिकों के सहयोग से किया जाए।
- Primary texts और उनके प्रमाणिक अनुवादों को प्राथमिकता दी जाए।
- वैदिक ज्ञान से जुड़े अप्रमाणित वैज्ञानिक दावों से बचा जाए।
- पाठ्यक्रम को समावेशी एवं बहुलतावादी बनाया जाए।
- भारतीय ज्ञान परंपरा को rote learning के बजाय पूछताछ-आधारित शिक्षा से जोड़ा जाए।
- Yoga, meditation तथा wellness practices को प्रमाण-आधारित एवं गैर-सांप्रदायिक रूप में प्रस्तुत किया जाए।
- स्थानीय एवं स्वदेशी ज्ञान को भी IKS के व्यापक संदर्भ में स्थान दिया जाए।
- IKS आधारित शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित किए जाएँ।
- विश्वविद्यालयों में अंतर्विषयक IKS अनुसंधान केंद्र को प्रोत्साहित किया जाए।
- भारतीय ज्ञान को AI और डिजिटल तकनीक की सहायता से सुलभ बनाया जाए।
- प्राचीन ग्रंथों के महत्वपूर्ण संस्करण एवं आधुनिक भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण अनुवाद उपलब्ध कराए जाएँ।
- विद्यार्थियों में केवल सांस्कृतिक गौरव नहीं बल्कि आलोचनात्मक प्रशंसा विकसित की जाए।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली की समकालीन प्रासंगिकता पर अनुभवजन्य अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाए।
- भारतीय तथा वैश्विक ज्ञान परंपराओं के बीच तुलनात्मक अध्ययन विकसित किए जाएँ।

26. चर्चा

प्रस्तुत साहित्य के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक ज्ञान परंपरा की आधुनिक शिक्षा में सबसे महत्वपूर्ण प्रासंगिकता उसके समग्र दृष्टिकोण में निहित है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में कई बार शैक्षणिक उपलब्धि और रोजगार क्षमता को शिक्षा का मुख्य परिणाम मान लिया जाता है। वैदिक-उपनिषदिक दृष्टिकोण हमें यह प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करता है कि शिक्षित मनुष्य कैसा होना चाहिए। एक उच्च अंक प्राप्त करने वाला व्यक्ति यदि नैतिक विवेक, सामाजिक संवेदना, आत्म-अनुशासन तथा मानसिक संतुलन से वंचित है तो क्या उसे पूर्णतः शिक्षित कहा जा सकता है? भारतीय ज्ञान परंपरा इस प्रश्न का उत्तर व्यक्ति के बहुआयामी विकास में खोजती है। यहाँ वैदिक ज्ञान का आधुनिक उपयोग "पुराने समय में वापस लौटने" के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। गुरुकुल व्यवस्था को उसी ऐतिहासिक रूप में पुनर्स्थापित करना न तो संभव है और न ही आवश्यक। इसके विपरीत गुरु-शिष्य परंपरा से mentoring, श्रवण-मनन से reflective learning, आत्म-अनुशासन से self-regulated learning, संवाद परंपरा से collaborative learning और प्रकृति संबंधी चेतना से sustainability education जैसे उपयोगी तत्व ग्रहण किए जा सकते हैं। इसी प्रकार पंचकोश को आधुनिक psychology का वैज्ञानिक विकल्प न मानते हुए समग्र मानव विकास के एक भारतीय दार्शनिक framework के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

अतः भारतीय ज्ञान और आधुनिक ज्ञान को प्रतिस्पर्धी ध्रुवों के रूप में देखने के बजाय संवादात्मक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

27. अध्ययन की प्रमुख उपलब्धियाँ

- वैदिक ज्ञान परंपरा शिक्षा को जीवन और व्यक्तित्व से जोड़ती है।
- ज्ञान और नैतिक आचरण को परस्पर संबद्ध माना गया।
- विद्यार्थी का विकास बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में देखा गया।
- गुरु-शिष्य संवाद individualized learning के लिए महत्वपूर्ण था।
- आत्म-अनुशासन शिक्षा का आधारभूत तत्व था।

- प्रश्न, चिंतन और संवाद की महत्वपूर्ण बौद्धिक परंपरा विद्यमान थी।
- प्रकृति एवं मानव के परस्पर संबंध पर बल मिलता है।
- समग्र शिक्षा की अनेक अवधारणाएँ NEP 2020 के लक्ष्यों से संवाद स्थापित करती हैं।
- आधुनिक शिक्षा में वैदिक ज्ञान का उपयोग पुनरुत्थानवादी न होकर आलोचनात्मक एवं प्रमाण-आधारित होना चाहिए।
- भारतीय ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का समन्वय भविष्य के लिए अधिक उपयोगी दृष्टिकोण हो सकता है।

28. अध्ययन की सीमाएँ

- अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।
- इसमें किसी विद्यार्थी या शिक्षक से प्रत्यक्ष डेटा प्राप्त नहीं किया गया।
- वैदिक साहित्य अत्यंत विस्तृत है; सभी ग्रंथों का समग्र विश्लेषण संभव नहीं था।
- अध्ययन में चयनित शैक्षिक एवं दार्शनिक अवधारणाओं पर मुख्य ध्यान दिया गया है।
- प्राचीन अवधारणाओं की आधुनिक शैक्षिक व्याख्या संदर्भानुसार भिन्न हो सकती है।
- वैदिक तथा उत्तरवैदिक विचारों के ऐतिहासिक अंतर को प्रत्येक स्थान पर विस्तार से प्रस्तुत नहीं किया गया।
- अध्ययन वैदिक ज्ञान की शैक्षिक प्रासंगिकता पर केंद्रित है, उसके सभी धार्मिक, भाषिक अथवा ऐतिहासिक आयामों पर नहीं।

29. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि वैदिक ज्ञान परंपरा भारतीय शिक्षा-दर्शन का एक महत्वपूर्ण बौद्धिक स्रोत है। इसमें शिक्षा को केवल सूचना, परीक्षा या रोजगार प्राप्ति की प्रक्रिया के रूप में नहीं बल्कि मानव जीवन के व्यापक विकास से संबद्ध माना गया है। सत्य, ज्ञान, आत्म-अनुशासन, संवाद, सामाजिक सहयोग, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता, आत्मचिंतन और लोककल्याण इसके महत्वपूर्ण शैक्षिक तत्व हैं। समग्र मानव विकास के संदर्भ में वैदिक-उपनिषदिक विचार व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक आयामों पर विचार करने का एक व्यापक दार्शनिक आधार उपलब्ध कराते हैं। विशेष रूप से पंचकोश की अवधारणा आधुनिक समग्र शिक्षा के साथ सार्थक संवाद स्थापित करने की क्षमता रखती है, बशर्ते इसे दार्शनिक framework के रूप में समझा जाए, आधुनिक वैज्ञानिक मॉडल के प्रतिस्थापन के रूप में नहीं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा holistic, multidisciplinary, experiential और value-based education के साथ Indian Knowledge Systems पर दिया गया बल इस विषय की समकालीन प्रासंगिकता को और बढ़ाता है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में वैदिक ज्ञान परंपरा का समावेश तभी सार्थक होगा जब उसे प्रामाणिक स्रोतों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आलोचनात्मक चिंतन, सामाजिक समावेशन तथा आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप प्रस्तुत किया जाए।

अतः आवश्यकता प्राचीन शिक्षा की यथावत पुनर्स्थापना की नहीं, बल्कि उसकी उपयोगी बौद्धिक एवं नैतिक अंतर्दृष्टियों को आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के साथ रचनात्मक रूप से जोड़ने की है। ऐसा समन्वित दृष्टिकोण ऐसी शिक्षा के निर्माण में योगदान दे सकता है जो विद्यार्थियों को केवल सफल पेशेवर नहीं बल्कि विवेकशील, स्वस्थ, संवेदनशील, जिम्मेदार और संतुलित मनुष्य बनने में सहायता करे।

संदर्भ सूची / References

- Altekar, A. S. (2009). Education in Ancient India. Isha Books. (Original work published 1944).
- Atharvaveda. Selected hymns on life, knowledge, social harmony and well-being.
- Barbhai, M. (2026). The ancient Indian education system: A comprehensive study of Gurukuls and universities. Research Review Journal of Indian Knowledge Systems, 3(1).
- Basham, A. L. (1954). The Wonder That Was India. Sidgwick & Jackson.
- Bhatta, C. P. (2009). Holistic personality development through education: Ancient Indian cultural experiences. Journal of Human Values, 15(1). https://doi.org/10.1177/097168580901500104
- Dasgupta, S. (1922). A History of Indian Philosophy (Vol. 1). Cambridge University Press.
- Government of India, Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.
- Isha Upanishad. Selected verses on knowledge and human life.
- Jacob, R., & Gaur, R. (2025). Integrating Indian Knowledge Systems in secondary education: A pathway to holistic development. Revista Electronica de Veterinaria, 25(1).
- Joshi, L. M. (2024). भारतीय ज्ञान परंपरा की पृष्ठभूमि में उपनिषद कालीन शिक्षा के लक्ष्य एवं उनकी वर्तमान में उपयोगिता का अध्ययन. ज्ञान गरिमा सिंधु.

- Keay, F. E. (1918). Ancient Indian Education: An Inquiry into Its Origin, Development, and Ideals. Oxford University Press.
- Mookerji, R. K. (1947). Ancient Indian Education: Brahmanical and Buddhist. Motilal Banarsidass.
- Olivelle, P. (1998). The Early Upanishads: Annotated Text and Translation. Oxford University Press.
- Patil, V. K., & Patil, K. D. (2021). Traditional Indian education values and new National Education Policy adopted by India. Journal of Education. https://doi.org/10.1177/00220574211016404
- Radhakrishnan, S. (1994). The Principal Upanishads. HarperCollins.
- Rigveda. Selected hymns, particularly 1.89 and 10.191.
- Sarita, & Singh, D. (2025). Integrating Indian Knowledge Systems in contemporary education: A theoretical analysis of NEP 2020. Research Hub International Multidisciplinary Research Journal, 12(8), 6–8.
- Seema, R., & Deb, T. (2026). Insights from ancient Indian education: Fostering skills and values for holistic development. ShodhPatra: International Journal of Science and Humanities, 3(2), 125–135. https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i2.45530
- Singh, G., Singh, R., & Singh, K. (2025). Holistic heritage of ancient India: Guiding principles for present education. Research Review Journal of Indian Knowledge Systems, 2(2).
- Taittiriya Upanishad. Shiksha Valli and Brahmananda Valli.
- University Grants Commission. (2023). Guidelines for Incorporating Indian Knowledge in Higher Education Curricula. UGC, Government of India.
- University Grants Commission. (2023). Guidelines for Introduction of Courses Based on Indian Heritage and Culture. UGC, Government of India.
- University Grants Commission. (2023). Guidelines for Training/Orientation of Faculty on Indian Knowledge Systems. UGC, Government of India.
- University Grants Commission. (2023). Mulya Pravah 2.0: Inculcation of Human Values and Professional Ethics in Higher Education Institutions. UGC.
- Vyas, M. S. (2025). 14 Vidyās and 64 Kalās: The foundation of ancient Indian education in the light of IKS. Research Review Journal of Indian Knowledge Systems, 2(1).
- भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार.